Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अप्रैल/2023 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

APRIL-2023

Date of Publication: 15-03-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

19-03-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जींद (हरयाणा) में आयोजित तरबियती कैंप के बाद एक ग्रुप फ़ोटो ।

19-03-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जींद (हरयाणा)में आयोजित तरबियती कैंप में भाषण हुए श्री अज़ीज़ अहमद नासिर साहिब नाइब क़ाइद उमूमी भारत।

श्री फ़ज़्लुर्रहमान साहिब ज़ईम मज्लिस अंसारुल्लाह चेन्नई एक हस्पताल में मरीज़ों को फल वितरण करते हुए।

29-03-2023 को ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी पटना में World Crisis and Pathway to Peace श्री इमरान अहमद स्कॉलर को पेश करते हुए श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम पटना।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

03-03-2023 को सिख श्रद्धालु के संग के अवसर पर मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान द्वारा आयोजित फ़्री मेडिकल कैंप के दो दृश्य ।

16-02-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) द्वारा आयोजित खाना तक़सीम का एक दृश्य ।

12-02-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) द्वारा आयोजित कुलू जामिआ का एक दृश्य ।

18-03-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह मानसा (पंजाब) में आयोजित तरबियती कैंप के बाद एक ग्रुप फ़ोटो ।

26-03-2023 को श्री शेख़ हारून रशीद साहिब नाज़िम अंसारुल्लाह कटक (ओडिशा) एक सर्व धर्म सम्मलेन में इस्लामी अम्न का सन्देश देते हुए ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21 अप्रैल 2023 **Issue - 04**

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : रोज़े की स्वीकृति के स्त्रोत	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मानव जाति से सहानुभूति	6
रोज़े का महत्त्व तथा लाभ लेखक : ताहिर अहमद जमाली साहिब	8
इस्लाम में माहे रमज़ान के महत्त्व और उसके उद्देश्य लेखक : मुहम्मद अब्दुल बाक़ी साहिब, भागलपुर बिहार	10

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

دسुल क़ुर्आन

قرآن کریم

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ
تَتَّقُوۡنَ ۔ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ ؕ فَمَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ مَّرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيۡنَ
يُطِيۡقُوۡنَهٗ فِدۡيَةٌ طَعَامُ مِسۡكِيۡنٍ ؕ فَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا فَهُوَ خَيۡرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنۡ تَصُوۡمُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ
تَعۡلَمُوۡنَ ۔ (सूरतुल बक़रह : आयत 184-185)

अनुवादः हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुम से पूर्ववर्ती लोगों पर अनिवार्य कर दिए गए थे ताकि तुम तक़वा धारण करो। गिनती के कुछ दिन हैं। अत: जो भी तुम में से रोगी हो या यात्रा पर हो तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। और जो लोग इसकी शक्ति न रखते हों, उन पर एक दरिद्र को भोजन कराना फ़िदिय: (प्रायश्चित स्वरूप) है। अत: जो कोई भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है। और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए उत्तम है।

दर्सुल हदीस

عَنۡ اَبِیۡ هُرَيۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ كُلُّ
عَمَلِ بۡنِ اٰدَمَ لَهٗ اِلَّا الصِّيَامَ فَاِنَّهٗ لِیۡ وَاَنَا اَجۡزِیۡ بِهٖ ۔ وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ فَاِذَا كَانَ يَوۡمُ صَوۡمِ اَحَدِكُمۡ
فَلَا يَرۡفُثۡ وَلَا يَصۡخَبۡ فَاِنۡ سَابَّهٗ اَحَدٌ اَوۡ قَاتَلَهٗ فَلۡيَقُلۡ اِنِّیۡ صَآئِمٌ ۔ لِلصَّآئِمِ فَرۡحَتَانِ يَفۡرَحُهُمَا ، اِذَا
اَفۡطَرَ فَرِحَ ، وَاِذَا لَقِیَ رَبَّهٗ فَرِحَ بِصَوۡمِهٖ ۔ (बुखारी किताबुस्सौम बाब هل يقول انی صائم اذا شتم)

अनुवाद - हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह फरमाता है : मनुष्य के सारे कर्म उसके लिए हैं, लेकिन रोज़े मेरे लिए है, और मैं स्वयं उसका प्रतिफल बनूँगा।" अल्लाह तआला फरमाता है: "रोज़ा ढाल है, अत: तुम में से जब किसी का रोज़ा हो तो न वह व्यर्थ बातें करे न शोर इत्यादि करे। यदि कोई उसे गाली देता है या उससे लड़ता है, तो उसे जवाब में कहना चाहिए कि मैं रोज़े से हूं। रोज़ेदार के लिए दो खुशियां निर्धारित हैं, एक खुशी तब होगी जब वह रोज़ा खोल लेगा और दूसरी तब होगी जब वह रोज़े की वजह से अल्लाह तआला से मुलाकात करेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"आध्यात्मिक और शारीरिक गर्मी मिल कर रमज़ान हुआ"

"रमज़ सूर्य की गर्मी को कहते हैं। क्योंकि रमज़ान में मनुष्य खाने-पीने और समस्त शारीरिक आनंदों पर सब्र करता है। दूसरे अल्लाह तआला के आदेशों के लिए एक गर्मी और जोश उत्पन्न करता है। आध्यात्मिक तथा शारीरिक गर्मी और जोश मिल कर रमज़ान हुआ। भाषाविद जो कहते हैं कि गर्मी के महीने में आया, इसलिए रमज़ान कहलाया। मेरे निकट यह ठीक नहीं है क्योंकि अरब के लिए यह विशेषता नहीं हो सकती। आध्यात्मिक गर्मी से भाव आध्यात्मिक रुचि और शौक और धार्मिक तपिश होती है। (मल्फ़ूज़ात खंड प्रथम पृष्ठ 209-210 एडिशन 1984 ई०)

"एक बार ऐसा संयोग हुआ कि एक वृद्ध बुज़ुर्ग पवित्र रूप मुझे स्वप्न में दिखाई दिया और उसने यह वर्णन करके कि "कुछ रोज़े आसमानी प्रकाशों के स्वागत के लिए रखना नुबुव्वत के खानदान की सुन्नत है।" इस बात की ओर संकेत किया कि मैं इस नबियों के ख़ानदान की सुन्नत का पालन करूँ। अत: मैंने कुछ अवधि तक रोज़े की अनिवार्यता को उचित समझा परन्तु साथ ही यह विचार आया कि इस मामले को गुप्त तौर पर सम्पन्न करना उचित है। अत: मैंने यह ढंग अपनाया कि घर से मर्दाना बैठक में अपना खाना मंगवाता और फिर वह खाना गुप्त तौर पर कुछ अनाथ बच्चों को जिनको मैंने पहले से सुनिश्चित करके समय पर हाज़िरी के लिए बल देकर कह दिया था, दे देता था और इस प्रकार पूरा दिन रोज़े में गुज़ारता और ख़ुदा तआला के अतिरिक्त इन रोज़ों की किसी को ख़बर न थी। फिर दो-तीन सप्ताह के बाद मुझे मालूम हुआ कि ऐसे रोज़ों से जो एक समय में पेट भरकर रोटी खा लेता हूं। मुझे कुछ भी कष्ट नहीं, उचित है कि खाने को किसी हद तक कम करूं। इसलिए मैं उस दिन से खाने को कम करता गया, यहां तक कि मैं पूरे दिन-रात में केवल एक रोटी को पर्याप्त समझता था और इसी प्रकार मैं खाने को कम करता गया, यहां तक कि शायद केवल कुछ तोला रोटी में से आठ पहर के बाद मेरी ख़ुराक थी। संभवत: आठ या नौ माह तक मैंने ऐसा ही किया और इतनी कम ख़ुराक के बावजूद कि दो-तीन माह का बच्चा भी इस पर सब्र नहीं कर सकता, ख़ुदा तआला ने मुझे प्रत्येक विपत्ति और कष्ट से सुरक्षित रखा और इस प्रकार के रोज़ों से चमत्कारों में से जो मेरे अनुभव में आए वे पवित्र कश्फ़ हैं जो उस समय मुझ पर खुले। अत: कुछ पहले नबियों से मुलाकातें हुईं और जो उच्च वर्ग के वली लोग इस उम्मत में गुज़र चुके हैं उन से मुलाकाल हुई। एक बार बिलकुल जागृत अवस्था में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हसन, हुसैन, अली रज़ि. तथा फ़ातमा रज़ि. सहित देखा और यह स्वप्न न था बल्कि जागने का एक प्रकार था। निष्कर्ष यह कि इसी तरह पर कई पवित्र लोगों से मुलाकातें हुईं जिनका वर्णन करना विस्तार चाहता है। इसके अतिरिक्त रूहानी प्रकाश उपमा के तौर पर हरे और लाल मनोहर एवं मनमोहक स्तंभ के रूप में दिखाई देते थे जिन का वर्णन करना लिखने की शक्ति से सर्वथा बाहर है। वे प्रकाशीय स्तंभ जो सीधे आकाश की ओर गए हुए थे जिनमें से कुछ चमकदार सफ़ेद तथा कुछ हरे और कुछ लाल थे। उनको दिल से ऐसा संबंध था कि उन्हें देखकर दिल को अत्यन्त आनन्द मिलता था और दुनिया में ऐसा कोई भी आनंद नहीं होगा जैसा कि उनको देखकर दिल और रूह को आनन्द आता था। मेरे विचार में है वे स्तंभ ख़ुदा तआला और बन्दे के प्रेम के मिश्रण से एक उपमा के रूप में प्रकट किए गए थे अर्थात् वह एक प्रकाश था जो दिल से निकला और दूसरा वह प्रकाश था जो ऊपर से उतरा तथा दोनों के मिलने से एक स्तंभ जैसा बन गया। ये रूहानी बातें हैं कि दुनिया उनको नहीं पहचान सकती।" (किताबुल बरिय्य:, रूहानी खज़ाइन, खंड 13, पृष्ठ 197-199, फुटनोट)

सम्पादकीय

रोज़े की स्वीकृति के स्त्रोत

रमज़ान के महीने में अल्लाह के आदेशों का पालन करते हुए कई मुश्किलें सहकर रोज़ा रखते हैं। यदि हम रोज़े की शर्तों का पालन नहीं करते हैं, तो हमारा रोज़ा सर्वशक्तिमान ख़ुदा को स्वीकार्य नहीं है। इसलिए ज़रूरी है कि रोज़े को सभी अनिवार्यताओं के साथ रखा जाए। ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए या मुंह से ऐसी कोई बात नहीं निकलनी चाहिए, जिससे हमारे रोज़े की स्वीकृति में बाधा उत्पन्न हो।

इसलिए हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ कि जो व्यक्ति रमज़ान की रातों में ईमान की अनिवार्यताओं और पुण्य की इच्छा से प्रार्थना करता है, उसके पिछले समस्त पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। (बुखारी किताबुस्सौम)

रोज़े की स्वीकृति के लिए ज़रूरी है कि अपना समय व्यर्थ बातों में बिताने के विपरीत परहेज़ करते हुए नेक कामों में लगाएं। उदाहरण के लिए, नफ़्ल नमाज़, ख़ुदा के ज़िक्र और दुआ में, कुरआन और हदीस का दर्स सुनना, एम॰टी॰ए के शैक्षणिक और धार्मिक कार्यक्रमों को देखना, खुतबा जुमा सुनना और सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों को सुनना, पवित्र कुरआन की तिलावत करते हुए, इस्लाम के शांतिपूर्ण संदेश को प्रसारित करने, नेकी की दावत देने में समय बिताने की कोशिश करनी चाहिए।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: दो शब्द हैं जो अल्लाह को बहुत प्रिय हैं, जो ज़बान पर हल्के हैं और क़यामत के दिन कर्मों के पलड़े में भारी होंगे। वह शुभ शब्द ये हैं :- سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ (बुख़ारी)

इसी तरह एक मौके पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِيْ اَنْ يَدَعَ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ- (बुखारी किताबुस्सौम अध्याय मन लम यदआ कौलज़ूरे वल अमला बिही) अर्थात जो व्यक्ति झूठ बोलने और झूठ पर अमल करने से बाज़ नहीं आता, अल्लाह को उसके भूखे-प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं अर्थात उसका रोज़ा व्यर्थ है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हमेशा रोज़ादार को यह दृष्टिगत रखना चाहिए कि इस से इतना ही मतलब नहीं है कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र में व्यस्त रहे ताकि राहत और आराम प्राप्त हो। अत: रोज़ा से यही मतलब है कि इन्सान एक रोटी को छोड़कर जो जिस्म की परवरिश करती है, दूसरी रोटी को हासिल करे जो रूह की तसल्ली और तृप्तता का कारण है। और जो लोग केवल ख़ुदा के लिए रोज़े रखते हैं और निरे रस्म के तौर पर नहीं रखते उन्हें चाहिए कि अल्लाह

तआला की प्रशंसा और स्तुति में लगे रहें। जिससे दूसरी ग़िज़ा उन्हें मिल जाए"। (मलफ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 102)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"केवल संसार की अंतहीन व्यस्तता में मत फंसो। रोज़े रखने के बाद भी सिवाय इसके कि सुबह सहरी खा ली और फिर सांसारिक कार्यों तथा धंधों में व्यस्त हो गए। अन्यथा सांसरिक लोग भी स्वास्थ्य की दृष्टि से आहार कम कर देते हैं। आपके भोजन की कमी शरीर की सुंदरता या स्वास्थ्य के कारण नहीं, बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए होनी चाहिए। और यह सानिध्य तभी प्राप्त होगा जब अल्लाह से संबंध पहले से अधिक होगा। उसकी स्तुति करते हुए और उसे समस्त शक्तियों का स्वामी समझते हुए उसकी ओर और अधिक झुकेंगे।" (ख़ुतबा जुमा 15 अक्तूबर 2004 ई०)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार रोज़ा रखने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मानव जाति से सहानुभूति

इस समय एक ओर रूस और यूक्रेन के बीच लगातार चार वर्षों से न केवल युद्ध चल रहा है, बल्कि दिन-ब-दिन भयानक होता जा रहा है। लोगों का जीवन तबाह हो रहा है, परमाणु उपयोग की धमकियां दी जा रही हैं। दूसरी तरफ़ लोग अपने पैदा करने वाले सच्चे ख़ुदा से दूर हो रहे हैं और दुनियावी ख़ून बहा रहे हैं इसी तरह कुछ देशों में अहमदियत के विरोधियों की ओर से विरोध हो रहा है। इन परिस्थितियों को देखते हुए सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हमें बार-बार नमाज़ पढ़ने पर तवज्जो दे रहे हैं।

रमज़ानुल मुबारक निश्चित रूप से समस्त इबादतों का संग्रह है। सेहरी से पहले नमाज़ तहज्जुद पढ़ने का अवसर मिलता है। यह समय दुआ के स्वीकार होने का एक विशेष समय है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया: "इस महीने में मुसलमानों का एक बड़ा समूह है जो रात में उठकर अल्लाह की इबादत करता है, फिर सभी को सहरी के लिए उठना पड़ता है और इस तरह सभी को कुछ न कुछ इबादत करने का मौका मिलता है।" वहीं जब करोड़ों लोगों की दुआएं ख़ुदा तक पहुंचती हैं तो ख़ुदा उन्हें खारिज नहीं करता बल्कि कबूल कर लेता है। उस समय ईमान वालों की जमाअत संकट में होती है, फिर यह कैसे संभव है कि उनकी प्रार्थना स्वीकार न की जाए। (तोहफ़तुस्सियाम पेज 106)

इन दिनों में तरावीह की नमाज़ का भी ख़ास तौर पर आयोजन किया जाता है, जो नफ़्ल की नमाज़ होती है। हदीस में है कि यह ख़ुदा से निकटता हासिल करने का माध्यम है।

रमजान में रोजाना पांच नमाजें अत्यधिक विनम्रता के साथ पढ़ी जाती हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ

(सुनन अबी दाऊद : अध्याय दुआ का वर्णन)

कि दुआ ही तो वास्तविक इबादत है और तुम्हारे रब का आदेश है कि तुम मुझसे दुआ करो और मैं कुबूल करूंगा।

इसी प्रकार दुआ के स्वीकार होने का समय भी रोज़ा इफ़तार का समय होता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: لِلصَّائِمِ عِنْدَ فِطْرِهِ لَدَعْوَةٌ مَا تُرَدُّ (इब्ने माजा अबवाबुस्सियाम हदीस नंबर 1753) कि इफ़तार के समय रोज़ेदार की दुआ स्वीकार होने का सौभाग्य पाती है।

इसलिए भारी-भरकम इफ्तार के प्रबंधों,

बातचीत में समय बर्बाद करने की बजाय इस समय को इबादत और ख़ुदा की याद में बिताना चाहिए। आप इस समय पवित्र कुरआन का पाठ भी कर सकते हैं। इस्तग़फ़ार, दुरूद शरीफ़ और ज़िक्र इलाही भी किया जा सकता है। कुरआन की दुआएं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएं और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं भी पढ़ सकते हैं। आपको जो भी रूप पसंद हो उसे अपनाएं। हदीसें बताती हैं कि रमज़ान के दौरान हर दिन इफ़तार के समय अल्लाह कई गुनाहगारों को आग से निजात देता है।

रमज़ान में की जाने वाली दुआओं की स्वीकार्यता के लिए दुरूद शरीफ़ पढ़ना अनिवार्य है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"अपनी दुआओं को दुरूद में बदल दो और सच्चे दिल से वातावरण में इतना दुरूद बिखेरें कि वातावरण के कण-कण में दुरूद की महक आ जाए और हमारी सारी दुआएं खुदा के दरबार में पहुंचें और इस दुरूद के माध्यम से स्वीकार हो जाएं।" (खुतबा जुमा: 24 फरवरी, 2006)

इसी प्रकार फ़रमाया "आज हर अहमदी करोड़ों करोड़ दरूद और सलाम अपने दिल की पीड़ा के साथ मिला कर अर्श पर पहुंचाए।" यह दरूद बंदूकों की गोलियों से भी अधिक दुश्मन को तबाह करने में काम आएगा।" (खुतबा जुमा, 16 जनवरी, 2015)

रमज़ानुल मुबारक का पवित्र कुरआन से गहरा संबंध है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"दुआओं की स्वीकार्यता के लिए क़ुरआने करीम को सीखना, पढ़ना और याद करना भी ज़रूरी है।" (खुतबा जुमा: 21 अक्टूबर, 2005)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें मक़बूल दुआओं का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201
Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

रोज़े का महत्त्व तथा लाभ

(ताहिर अहमद जमाली, मुरब्बी-ए-सिलसिला
सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۔ (अलबक़रा : 184)

अनुवाद :- हे वे लोगो जो ईमान लाए हो, तुम पर रोज़े इसी प्रकार फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम संयम धारण करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि यदि लोगों को रमज़ान के महत्त्व का ज्ञान होता तो मेरी उम्मत इस बात की ख़ाहिश करती कि सारा साल ही रमज़ान हो। इस पर एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह तआला के नबी! रमज़ान के फ़ज़ाइल क्या हैं? आप ने फ़रमाया निस्संदेह जन्नत को रमज़ान के लिए साल के आग़ाज़ से आख़िर तक सजाया जाता है। (मोअज्जम अलकबीर खंड 22 पृष्ठ 388 ता 389)

इसी तरह एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हों से रिवायत है आप बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े ईमान की हालत में और अपना मुहासिबा नफ़्स करते हुए रखे उस के गुज़श्ता गुनाह माफ़ कर दिए जाऐंगे। (बुख़ारी किताब अलईमान बाब सौम रमज़ान एहतिसाबा मिनल ईमान हदीस 38)

हदीस कुदसी है كُلُّ عَمَلِ ابْنِ اٰدَمَ لَهٗ اِلَّا الصِّيَامَ فَاِنَّهٗ لِيْ وَاَنَا اَجْزِيْ بِهٖ۔ (बुख़ारी किताबुस्सौम) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है इन्सान के सब काम उस के अपने लिए हैं मगर रोज़ा सिर्फ मेरे लिए है और मैं ख़ुद उस की जज़ा बनूँगा।

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया , صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ اَتْبَعَهٗ سِتًّا مِّنْ شَوَّالٍ كَانَ كَصِيَامِ الدَّهْرِ (मुस्लिम) जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखे (उस के बाद ईद का दिन छोड़कर) शवाल के भी छ: रोज़े रखे उस को इतना सवाब मिलता है जैसे उसने साल भर के रोज़े रखे हों।

एक और हदीस में फ़रमाया قَوْلَ الزُّوْرِ وَالْعَمَلَ بِهٖ فَلَيْسَ لِلّٰهِ حَاجَةٌ فِيْ اَنْ يَّدَعَ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ (बुख़ारी किताबुस्सौम) यानी जो रोज़े की हालत में भी झूठ बोलता है और इस पर अमल करने से परहेज़ नहीं करता तो अल्लाह तआला को हरगिज़ इस बात की कोई परवाह नहीं कि वो अपना खाना पीना छोड़ दे।

इसी तरह फ़रमाया। जिसने बग़ैर उज्र और बीमारी के एक रोज़ा भी छोड़ा। لَمْ يُجْزِهٖ صِيَامُ الدَّهْرِ तो उम्र-भर के रोज़े उस का बदल न होंगे। (तिरमिज़ी अबवाबुस्सौम)

इस आयत में जो मैंने तिलावत की है कि तुम पर रोज़े इस लिए फ़र्ज़ किए गए हैं, रमज़ान का महीना हर साल इस लिए मुक़र्रर किया गया है ताकि तुम संयम धरण करो। और तक़्वा (संयम) यही है कि हर काम ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए हो तभी तुम रोज़ों से फ़ैज़याब हो सकते हो और शैतानी हमलों से बच सकते हो। जब ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला का तक़्वा इख़तियार करते हुए रोज़े रखोगे तो अल्लाह तआला की पनाह में आओगे और जब इन्सान अल्लाह तआला की पनाह में आए तो तभी शैतान से बच सकता है वर्ना शैतान का यह खुला चैलेंज है कि ज़रा इन्सान अल्लाह तआला की पनाह से दूर हुआ तो फ़ौरन उसे शैतान ने दबोचा, अपने क़ाबू में कर लिया। अत: ईमान में तरक़्क़ी और नफ़्स का मुहासिबा ही इन्सान को अल्लाह तआला की पनाह का पात्र बनाता है और यह तभी हो सकता है जब इन्सान तक़्वा पर चलने वाला हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि "तीसरी बात जो इस्लाम का रुकन है वह रोज़ा है। रोज़ा की हक़ीक़त से भी लोग नावाक़िफ़ हैं रोज़ा इतना ही नहीं कि इस में इन्सान भूखा प्यासा रहता

है, बल्कि उस की एक हक़ीक़त और इस का असर है जो तजुर्बा से मालूम होता है। इन्सानी फ़ित्रत में है कि जिस क़दर कम खाता है उसी क़दर आत्म शुद्धिकरण होता है और कशफ़ी क़ुव्वतें बढ़ती हैं। ख़ुदा तआला का इरादा इस से यह है कि एक ग़िज़ा को कम करो और दूसरी को बढ़ाओ। हमेशा रोज़ादार को यह दृष्टिगत रखना चाहिए कि इस से इतना ही मतलब नहीं है कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र में मसरूफ़ रहे ताकि तबत्तुल और इन्क़िता (अर्थात सांसारिक मोहमाया से अलग हो कर केवल ख़ुदा की इबादत में लीन होने की अवस्था) हासिल हो।

अत: रोज़े से यही मतलब है कि इन्सान एक रोटी को छोड़कर जो सिर्फ जिस्म की परवरिश करती है, दूसरी रोटी को हासिल करे जो रूह की तसल्ली और तृप्तता का कारण है। और जो लोग केवल ख़ुदा के लिए रोज़े रखते हैं और निरे रस्म के तौर पर नहीं रखते, उन्हें चाहिए कि अल्लाह तआला की हम्द तस्बीह और तहलील में लगे रहें जिससे दूसरी ग़िज़ा उन्हें मिल जाए।"

(मलफ़ूज़ात खंड 5 पृष्ठ 102 ऐडीशन 2003)

इस आदेश में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो फ़रमाया कि जिस क़दर इन्सान कम खाता है उसी क़दर आत्मशुद्धि होती है, तो इस से ख़्याल पैदा हो सकता था कि शायद भूखा प्यासा रहना ही आत्मशुद्धि है इसलिए आगे स्पष्ट कर दिया कि सिर्फ भूखा प्यासा रहना आत्मशुद्धि नहीं, न इस से रोज़े का मक़सद पूरा हो सकता है यह तो क़ुरआन के आदेश के विपरीत है क्योंकि उद्देश्य तो तक़्वा का हुसूल है। अत: फ़रमाया कि अगर रोज़ा ख़ुदा तआला की रज़ा के हुसूल के लिए रखा है तो फिर जितना भी रोज़े का वक़्त है यह भी ज़िक्र-ए-इलाही में गुज़ारो। एक दूसरी जगह आपने फ़रमाया कि "भूखे प्यासे रहने से तो बाअज़ जोगियों में भी ऐसी हालत पैदा हो जाती है कि इन को भी कशफ़ हो जाते हैं लेकिन यह एक मुस्लमान की ज़िंदगी का मक़सद नहीं है। एक मोमिन की ज़िंदगी का मक़सद तबत्तुल और इन्क़िता है और यह इबादत से, ज़िक्र-ए-इलाही से पैदा होता है और नमाज़ें उस का बेहतरीन ज़रीया हैं जो रूह पर असर डालती हैं, जो ख़ुदा तआला के सानिध्य का कारण बनती हैं।" (मलफ़ूज़ात खंड 2 पृष्ठ 696-697 ऐडीशन 2003)

फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तस्बीह की तरफ़ रमज़ान में तवज्जा रखो। सिर्फ सुब्हान अल्लाह कह देना काफ़ी नहीं है बल्कि जहां अल्लाह तआला की पाकीज़गी बयान हो वहां यह दुआ हो और दर्द से दुआ हो कि अल्लाह तआला हमें दुनिया की हर किस्म की दुनियावी दुष्टताओं से भी पवित्र कर दे और यह रमज़ान हमारे अंदर वास्तविक तक़्वा पैदा करने वाला बन जाए।

समाप्त

• •

(पृष्ठ 10 का शेष भाग)

जो अधिकार और मनुष्य से सम्बंधित जो अधिकार हैं उसको एक साथ और सही ढंग से बना लेने वाला बन जाता है।

अर्थात रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि यह मनुष्य के दिल में ईमान और इस्लाम की कदर को बढ़ाने वाला और इस महीना के जाते ही वो मनुष्य अपने शरीर और अध्यात्म में एक कपकपाहट महसूस किए बिना नहीं रह सकता। और अगर मनुष्य सही अर्थ मे रमज़ान की शर्तों को पूरा करने वाला हो जाता है तो फिर वह ख़ुदा से नाता जोड़ने वाला अर्थात ख़ुदा की प्राप्ति करने वाला बन जाता है जिस उद्देश्य से मनुष्य पैदा किया गया है कि वह ख़ुदा की पूजा अर्थात इबादत करने वाला अच्छा मनुष्य बन जाए और उसकी जिंदगी का मुख्य उद्देश्य ख़ुदा को प्राप्त करने वाला बन जाए।

ख़ुदा करे हम सब को इसकी तौफीक मिले और संसार में अमन व शांती कायम हो सके और हम सब अहमदिया मुस्लिम समुदाय के सलोगन "प्रेम सबसे नफरत किसी से नहीं " (Love For All hatred for None) पर अम्ल करने वाले बन जाएँ।

• •

इस्लाम में माहे रमज़ान के महत्त्व और उसके उद्देश्य

(मुहम्मद अब्दुल बाक़ी साहिब, भागलपुर बिहार)

मेरे विचार में संसार के सभी मुख्य धर्मो की पवित्र धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन से यह पता चलता है कि उपवास (रोज़ा) को एक खास महत्व हासिल है और यही कारण है कि मुनष्य अपनी आध्यात्मिक ज़िंदगी और ख़ुदा की प्राप्ती के उद्देश्य से इसका प्रचलन सभी धर्मो में किसी न किसी रूप में चला आ रहा है।

ख़ुदा जब किसी मनुष्य को जन्म देता है तो उसे एक साथ दो ज़िंदगीयाँ (जीवन) प्रदान करता है शारीरिक जीवन और ii) अध्यात्मक जीवन। यही कारण है कि शारीरिक जीवन को जिस किसी परिवार में ज्यादा महत्व दी जाती है वो पैदा होने वाला मुनुष्य एक साधारण जिंदगी पाता है और फिर अपनी आयु प्राप्ती समावृति के बाद उसका अंत हो जाता है और जिस परिवार में उस पैदा होने वाले मनुष्य की अध्यातमिक जीवन पर ज्यादा जोर दिया जाता है और माहौल होता है उसमें से ख़ुदा अपना अवतार, नवी, साधु, संत, पीर, बुजुर्ग इत्यादी चुनता है और उसका अपना एक विशेष महत्व होता है क्योंकि उसका ख़ुदा से अपना सीधा, लगाव पैदा हो जाता है और उसकी हिदायत और बताए हुए रास्तो पर लोगों को अपनी ओर बुलाकर उसके अंदर भी आध्यातमिक महत्व पैदा करता है।

इस्लाम में रमजान का महीना-: इसी उपवास को एक नियम के तहत करना होता है जिसका नाम रोज़ा है जो एक अरबी शब्द 'रमज़' से निकला है, जिसका अर्थ अरबी भाषा में जलन और सोज़िश' (गरमी) के होते हैं। चाहे वो जलन धुप की हो, चाहे वो किसी बीमारी की हो। इस प्रकार 'रेमज़ान' का अर्थ यह हुआ कि ऐसा मौसम जिसमें शक्ति के साथ कठिन समय बिताए जाते हो, क्योंकि इसके दौरान एक ओर जहाँ सुर्य उदय के पहले से, सुर्यास्त तक भूखा प्यास और सभी प्रकार के कष्ट और सभी प्रकार की बुरी आदतों पर रोक होती है, और बुरी से बुरी आदत को छोड़ने का एक महत्वपूर्ण कारण बन सकता है, अगर मनुष्य ऐसा चाहे। अर्थात् को रमज़ान की गरमी अथवा जलन बुराई को नष्ट करने वाली और नेकी को बढ़ाने वाली होती है, अर्थात यह एक खास महत्व रखने वाला महीना होता है जिसमें मनुष्य अपनी खास प्रयास लगन और इबादत के अतिरिक्त ख़ुदा के खास फज़ल से, वे मनुष्य को ख़ुदा के समीप पहुंचा देता है।

रमज़ान का एक अर्थ यह भी होता है कि इस एक महीना में इस्लाम की पवित्र धार्मिक, पुस्तक कुरान मजीद ख़ुदा की ओर से हज़रत मोहम्मद साहेब पर आकाशवाणी के द्वारा उतारी गई।

रमज़ान का एक विशेष महत्व यह भी है कि रोज़ा, बीमार सफर करने वाले, बच्चों, लाचार, इत्यादी को माफ है क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि जो रोज़ा रखने के योग्य नहीं है उसे रोज़ा रखना माफ है।

इसकी एक विशेषता या महत्व यह भी है कि यह गरीबों की तकलीफ का एहसास दिलाता है और ईमानदारी तथा इंसाफ के साथ जिन्दगी गुज़ारने का गुर सीखाता है। इससे एक मनुष्य के साथ अच्छा व्यवहार करना, ईमानदारी, नेक चलनी और अपने रोज़ की ज़िन्दगी का लेखा जोखा लेने का अवसर प्रदान होता है और इस प्रकार एक अच्छे समाज का गठन करने का अवसर मिलता है और गरीबों की तकलीफ का एहसास होने के साथ साथ उनकी मदद करने का जज़्बा पैदा होता है। इस प्रकार समाज में आर्थिक ऊँच नीच और जातीय ऊँच नीच का जो प्रचलन आज बहुत ज्यादा पाया जाता है उसको दूर करने में मदद मिलती है। आज जो राजनीतिज्ञ आदी अन्य So called समाज से भी लोगों के द्वारा इफ्तार पार्टी का जो आयोजन किया है उसके पीछे रोज़ा का रखना या तोड़ना नहीं होता है। जाता अपितु यह केवल दिखावा, समाज में अपना बड़ापनी अपनी राजनीतिक लाभ इत्यादी के उद्देश्य से होता है जिसका रमज़ान या रोज़ा या इफ्तार पार्टी से कोई सरोकार नहीं होता है। रोज़ा का एक उद्देश्य यह भी है कि समाज अपनी अमीरी और गरीबी के बोध को दूर करता है, और इस प्रकार मनुष्य सही अर्थ में ख़ुदा से सम्बंधित जो अधिकार और मनुष्य से सम्बंधित जो अधिकार **(शेष पृष्ठ 9 पर देखिए)**